''मीठे बच्चे – कर्म करते स्वयं को आशिक समझ एक मुझ माशूक को याद करो, याद से ही तुम पावन बन पावन दुनिया में जायेंगे''

प्रश्नः- महाभारत लड़ाई के समय पर तुम बच्चों को बाप का कौन-सा हुक्म (आज्ञा) वा फरमान मिला हुआ है?

उत्तरः- बच्चे, बाप का हुक्म वा फरमान है – देही-अभिमानी बनो। सबको सन्देश दो कि अब बाप और राजधानी को याद करो। अपनी चलन को सुधारो। बहुत-बहुत मीठे बनो। कोई को दु:ख मत दो। याद में रहने की आदत डालो और स्वदर्शन चक्रधारी बनो। कदम आगे बढ़ाने का पुरुषार्थ करो।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

1) एक बाप में ही पूरा लव रखना है। सबको सच्चा रास्ता बताना है। धन्धा आदि करते अपनी पूरी सम्भाल करनी है। एक की याद में रहना है।
2) सर्विस करने का बहुत-बहुत शौक रखना है। अपनी चलन को सुधारना है, स्वदर्शन चक्रधारी बनना है।

वरदान:- मेहनत और महानता के साथ रुहानियत का अनुभव कराने वाले शक्तिशाली सेवाधारी भव

जो भी आत्मायें आपके सम्पर्क में आती हैं उन्हें रूहानी शक्ति का अनुभव कराओ। ऐसी स्थूल और सूक्ष्म स्टेज बनाओ जिससे आने वाली आत्मायें अपने स्वरूप का और रुहानियत का अनुभव करें। ऐसी शक्तिशाली सेवा करने के लिए सेवाधारी बच्चों को व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म की हलचल से परे एकाग्रता अर्थात् रुहानियत में रहने का व्रत लेना पड़े। इसी व्रत से ज्ञान सूर्य का चमत्कार दिखला सकेंगे।

स्लोगन:- बाप और सर्व की दुआओं के विमान में उड़ने वाले ही उड़ता योगी हैं।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

अति पाप आत्मा, अति अपकारी आत्मा, बगुले के ऊपर भी नफरत नहीं, घृणा नहीं, निरादर नहीं लेकिन विश्व-कल्याणकारी स्थिति में स्थित हो रहमदिल बन तरस की भावना रखते हुए सेवा का सम्बन्ध समझकर सेवा करो, जितने होपलेस केस की सेवा करेंगे उतने ही प्राइज़ के अधिकारी बनेंगे और नामीग्रामी विश्व-कल्याणकारी गाये जायेंगे। पीसमेकर की प्राइज़ लेंगे।

''मीठे बच्चे – अपनी बुद्धि को ज्ञान मंथन में बिजी रखो तो सब फिकरातों से फारिग हो जायेंगे, सदा खुशी बनी रहेगी''

प्रश्नः- जो अपने को शिवबाबा के यज्ञ का सर्वेन्ट समझते हैं उनकी निशानी सुनाओ?

उत्तरः- शिवबाबा इस ब्रह्मा मुख से जो कुछ बोलेंगे, उसे वह फौरन मान लेंगे। जो कहे – उसे मानना, इसको ही श्रीमत कहा जाता है। श्री-श्री शिवबाबा की मत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ बनते हो। श्रेष्ठ बनना माना विजय माला में आना।

गीतः- ओम् नमो शिवाए...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) बाप जो ज्ञान देते हैं, उसका ही सदैव मंथन करना है। युक्ति से बातें करनी है। बहुत प्यार से समझाना है।

2) अपने पास जो कुछ है वह जीते जी बाप को देकर ट्रस्टी बन एक बाप को याद करना है।

वरदानः- देह-अभिमान के मैं पन की सम्पूर्ण आहुति डालने वाले धारणा स्वरूप भव

जब संकल्प और स्वप्न में भी देह-अभिमान का मैं पन न हो, अनादि आत्मिक स्वरूप की स्मृति हो। बाबा-बाबा का अनहद शब्द निकलता रहे तब कहेंगे धारणा स्वरूप, सच्चे ब्राह्मण। मैं पन अर्थात् पुराने स्वभाव, संस्कार रूपी सृष्टि को जब आप ब्राह्मण इस महायज्ञ में स्वाहा करेंगे तब इस पुरानी सृष्टि की आहुति पड़ेगी। तो जैसे यज्ञ रचने के निमित्त बने हो, ऐसे अब अन्तिम आहुति डाल समाप्ति के भी निमित्त बनो।

स्लोगनः- स्वयं से, सेवा से और सर्व से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट लेना ही सिद्धि स्वरूप बनना है।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

योगी जीवन की ऊंची मंजिल को प्राप्त करने वाली आत्मा निंदा को स्तुति में, ग्लानि को गायन में, ठुकराने को सत्कार में, अपमान को स्व-अभिमान में, अपकार को उपकार में परिवर्तित कर बाप समान सदा विजयी, अष्ट रत्न और भक्तों के इष्ट बनो। यह भावना नहीं रखो कि यह भी तो कुछ बदले, तो मैं बदलूँ, यह लेने की भावना है। मुझे बायब्रेशन देना है। मुझे रहमदिल बनना है। मुझे गुणों का, शक्तियों का सहयोग देना है, इसमें मास्टर दाता, फ्राकदिल बनो।

''मीठे बच्चे – बाबा कितनी दूर से तुम्हें पढ़ाने आते हैं, पढ़ाई की फीस भी नहीं लेते तो कितना प्यार से पढ़ना चाहिए''

प्रश्नः- रुहानी गवर्मेन्ट ने सारी दुनिया के लिए यह फ्री स्कूल खोला है – क्यों?

उत्तरः- क्योंकि सभी ऑरफन, निधनके बन गये हैं। बाप ऐसे गरीब बच्चों से फीस क्या लेंगे। इस अन्तिम जन्म में बाप ऐसी पढ़ाई पढ़ाते हैं जिससे तुम विश्व का मालिक बन जाते हो। जो नये-नये बच्चे पढ़ने के लिए आते हैं, उन्हें भी कोई घाटा नहीं होता। भल पिछाड़ी में आये हैं लेकिन थोड़ी मेहनत कर पुरानों से भी आगे जा सकते हैं।

गीतः- जाग सजनियाँ जाग...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) पूरा-पूरा नष्टोमोहा बनना है। एक शिवबाबा दूसरा न कोई, यह पाठ पक्का करना है। सपूत बच्चा बन मात-पिता को फालो करना है।

2) बिगर कौड़ी खर्चे पढ़ाई से 21 जन्मों की राजाई मिलती है तो बहुत लगन से पढ़ाई पढ़नी है। स्वदर्शन चक्रधारी बनना है।

वरदानः- सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य के नशे और खुशी में रहने वाले पदमापदम भाग्यशाली भव

सारे विश्व में जो भी धर्म पितायें वा जगद्गुरू कहलाने वाले बने हैं किसी को भी मात-पिता के सम्बन्ध से अलौकिक जन्म और पालना प्राप्त नहीं होती है। वे अलौकिक मात-पिता का अनुभव स्वप्न में भी नहीं कर सकते और आप पदमापदमपति श्रेष्ठ आत्मायें हर रोज़ मात-पिता की वा सर्व सम्बन्धों की यादप्यार लेने के पात्र हो। स्वयं सर्वशक्तिमान बाप आप बच्चों का सेवक बन हर कदम में साथ निभाता है – तो इसी श्रेष्ठ भाग्य के नशे और खुशी में रहो।

स्लोगनः- तन और मन को सदा खुश रखने के लिए खुशी के ही समर्थ संकल्प करो।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

बापदादा सदा श्रीमत देते हैं कि मन में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखो, अपकारी पर भी उपकार की वृत्ति रखो – यह है स्वच्छ मन। स्वयं के प्रति वा अन्य के प्रति व्यर्थ संकल्प आता है तो यह स्वच्छ मन नहीं है। स्वच्छ मन, क्लीन और क्लीयर बुद्धि हो तब डबल लाइट स्थिति बन सकेगी। बाप समान स्थिति बनाने का यही सहज साधन है।

''मीठे बच्चे – बेहद का बाप आया है तुम बच्चों को अपने साथ ले जाने, इसलिए अब बाप का बनकर उनकी श्रीमत पर चलो''

प्रश्नः- बाप अपने बच्चों की तकदीर ऊंची बनाने के लिए कौन-सी श्रेष्ठ मत देते हैं?

उत्तरः- मीठे बच्चे मौत के पहले जितना हो सके याद में रहने का पुरुषार्थ कर लो, इससे ही तुम्हारी कमाई है। मेरा बच्चा बनकर कभी भूल से भी कोई पाप कर्म नहीं करना। भल माया के कितने भी तूफान आयें लेकिन पतित तो कभी नहीं बनना।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

1) शिवबाबा पर पूरा-पूरा बलि चढ़ना है अर्थात् जीते जी मरना है। श्रीमत पर चलना है।

2) शिवबाबा के बच्चे बने हैं तो कोई भी पाप का काम नहीं करना है। पवित्र बन अपना कल्याण करना है।

वरदानः- ज्ञान की गुह्य बातों को सुनकर उन्हें स्वरूप में लाने वाले ज्ञानी तू आत्मा भव

ज्ञानी तू आत्मायें हर बात के स्वरूप का अनुभव करती हैं। जैसे सुनना अच्छा लगता है, गुह्य भी लगता है लेकिन सुनने के साथ-साथ समाना अर्थात् स्वरूप बनना – इसका भी अभ्यास होना चाहिए। मैं आत्मा निराकार हूँ – यह बार-बार सुनते हो लेकिन निराकार स्थिति के अनुभवी बनकर सुनो। जैसी प्वाइंट वैसा अनुभव। इससे शुद्ध संकल्पों का खजाना जमा होता जायेगा और बुद्धि इसी में बिजी होगी तो व्यर्थ संकल्पों से सहज किनारा हो जायेगा।

स्लोगनः- नॉलेज एवं अनुभव की डबल अथॉरिटी वाले ही मस्त फकीर रमता योगी हैं।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

कोई भी बात फील करना फेल की निशानी है। कितना भी कोई अपकारी हो लेकिन आपकी दृष्टि और वृत्ति उपकारी हो। जितना अधिकारी उतना निरहंकारी। ज्ञान में चलने के बाद जो स्व अभिमान आ जाता है, उसका भी त्याग। जब इतनी त्याग की वृत्ति और दृष्टि हो तब स्मृति में बापदादा रहेगा और मुख पर भी यही बोल रहेंगे।

''मीठे बच्चे – तुम्हें योगबल से रावण दुश्मन पर जीत पानी है, मनुष्य से देवता बनने के लिए दैवीगुण धारण करने हैं''

प्रश्नः- सभी बच्चे बाप की श्रीमत पर एक जैसा नहीं चलते हैं – क्यों?

उत्तरः- क्योंकि बाप जो है, उसको सभी ने एक जैसा पहचाना नहीं है। जब पूरा पहचानेंगे तब श्रीमत पर चलेंगे। 2- माया दुश्मन श्रीमत पर चलने से रोक लेती है इसलिए बच्चे बीच-बीच में अपनी मत चला देते हैं। फिर कहते बाबा माया के तूफान आते हैं, आपकी याद भूल जाती है। बाबा कहते बच्चे – रावण माया से डरो मत। जोर से पुरुषार्थ करो तो वह थक जायेगी।

गीतः- न वह हमसे जुदा होंगे...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) योगयुक्त हो अपने हाथ से भोजन बनाना और खाना है। पवित्र दुनिया में जाने के लिए पवित्र भोजन खाना है। उसमें ही बल है।

2) नया तन-मन-धन प्राप्त करने के लिए पुराना सब कुछ बाप पर वारी कर देना है। इस शरीर सहित बाप पर पूरा-पूरा कुर्बान जाना है।

वरदानः- एकान्त और अन्तर्मुखता के अभ्यास द्वारा स्वयं को अनुभवों से सम्पन्न बनाने वाले मायाजीत भव

नॉलेजफुल के साथ पावरफुल अर्थात् अनुभवी मूर्त बनने के लिए एकान्तवासी और अन्तर्मुखी बनो। डगमग होने का कारण है अनुभव की कमी इसलिए सिर्फ समझने, समझाने वाले या मननमूर्त नहीं बनो, एकान्तवासी बन हर प्वाइंट के अनुभवी बनो तो किसी भी प्रकार के धोखे से, दु:ख वा दुविधा से बच जायेंगे। किसका बच्चा हूँ, क्या प्राप्ति है – इस पहले पाठ का अनुभव कर लिया तो मायाजीत सहज ही हो जायेंगे।

स्लोगनः- जिम्मेवारी सम्भालते हुए डबल लाइट रहने वाले ही बाप के समीप रत्न हैं।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

अपने तीन स्वरूप सदा स्मृति में रखो: एक उपकारी हूँ, दूसरा निरहंकारी और तीसरा अधिकारी हूँ। कितना भी कोई अपकारी हो लेकिन आपकी दृष्टि और वृत्ति उपकारी हो, फिर जितना अधिकारी उतना निरहंकारी। जब वृत्ति से भी मैं-पन का त्याग होगा, स्मृति में सदैव बाप और दादा रहेगा और मुख पर भी यही बोल रहेंगे तब विश्वपति बन विश्व की सर्विस कर सकेंगे।

''मीठे बच्चे – तुम्हारे जैसा सौभाग्यशाली कोई नहीं, क्योंकि जिस बाप को सारी दुनिया पुकार रही है वह तुम्हें पढ़ा रहे हैं, तुम उनसे बातें करते हो''

प्रश्नः- जिन बच्चों को विचार सागर मंथन करना आता है, उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तरः- उनकी बुद्धि में सारा दिन यही तात लगी रहती कि कैसे सबको रास्ता बतायें! कैसे किसका कल्याण करें! वह सर्विस के नये-नये प्लैन बनाते रहते हैं। उनकी बुद्धि में सारा ज्ञान टपकता रहता है। वे अपना टाइम वेस्ट नहीं करते।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) जो बातें अपने काम की नहीं हैं उन्हें सुनने वा बोलने में अपना समय वेस्ट नहीं करना है। जितना हो सके पढ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान देना है।

2) सदा खुशी और उमंग में रहना है कि हमें पढ़ाने वाला कौन है। पुरुषार्थ को कभी छोड़ना नहीं है। मुख से ज्ञान रत्न ही निकालने हैं।

वरदानः- समझदार बन तीन प्रकार की सेवा साथ-साथ करने वाले सफलतामूर्त भव

वर्तमान समय के प्रमाण मन्सा-वाचा और कर्मणा तीनों प्रकार की सेवा साथ-साथ चाहिए। वाणी और कर्म के साथ मन्सा शुभ संकल्प वा श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा सेवा करते रहो तो फल फलीभूत हो जायेगा क्योंकि वाणी में शक्ति तब आती है जब मन्सा शक्तिशाली हो, नहीं तो बोलने वाले पण्डित समान हो जाते क्योंकि तोते मुआफ़िक पढ़कर रिपीट करते हैं। ज्ञानी अर्थात् समझदार तीनों प्रकार की सेवा साथ-साथ करते और सफलता का वरदान प्राप्त कर लेते हैं।

स्लोगनः- अपने हर बोल, कर्म और दृष्टि से हर आत्मा को शान्ति, शक्ति व खुशी का अनुभव कराना ही महान आत्माओं की महानता है।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

जैसे होम्योपैथिक दवाई की छोटी-छोटी गोलियाँ कितने बड़े रोग को खत्म कर देती हैं, ऐसे आप मास्टर सर्वशक्तिमान् अपनी वृत्ति और दृष्टि से किसके भी कड़े संस्कार के रोग को खत्म कर सकते हो। जैसे वह दवाई यह नहीं कहती कि रोग को कैसे मिटायें, ऐसे आप परोपकारी आत्मायें मास्टर ज्ञान सूर्य बन सर्व आत्माओं के पतित संकल्पों वा वृत्तियों को भस्म करने की सेवा करो, अपकारी पर भी उपकार करो।

''अब चारों ओर दु:ख अशान्ति बढ़ रही है इसलिए अपने विश्व कल्याणी स्वरूप को प्रत्यक्ष करो, मन्सा सेवा बढ़ाओ, बाप के संग के रंग से डबल होली बनो''

- आज बापदादा हर बच्चे के भाग्य की रेखायें देख रहे हैं। मस्तक में चमकते हुए सितारे की रेखा, नयनों में स्नेह और शक्ति की रेखा, होठों में मुस्कान की रेखा, पाँव में हर कदम में पदम की रेखा देख रहे हैं।
- स्वराज्य अधिकारी अर्थात् मन-बुद्धि संस्कार को अपने कन्ट्रोल में चलाने वाला। अब समय प्रमाण हर एक बच्चे को विश्व कल्याणी स्वरूप को प्रत्यक्ष करने का समय है।
- अभी मन्सा सेवा की भी आवश्यकता है क्योंकि सभी तरफ विश्व कल्याणकारी बनना है, उसमें मन्सा वाचा और कर्मणा अर्थात् चलन और चेहरे से तीनों ही सेवा की अभी आवश्यकता है।
- आप सभी का रंग है बाप के संग का रंग। आप सभी सदा यह कल्याणकारी संगम में संग के रंग में में डबल पवित्र बनते हो। आप जब भविष्य में राज्य अधिकारी बनेंगे तो आत्मा और शरीर दोनों पवित्र होंगे।

वरदान:- स्वयं पर बापदादा को कुर्बान कराने वाले त्यागमूर्त, निश्चयबुद्धि भव

''बाप मिला सब कुछ मिला'' इस खुमारी वा नशे में सब कुछ त्याग करने वाले ज्ञान स्वरूप, निश्चयबुद्धि बच्चे बाप द्वारा जब खुशी, शान्ति, शक्ति वा सुख की अनुभूति करते हैं तो लोकलाज की भी परवाह न कर, सदा कदम आगे बढ़ाते रहते हैं। उन्हें दुनिया का सब कुछ तुच्छ, असार अनुभव होता है। ऐसे त्याग मूर्त, निश्चयबुद्धि बच्चों पर बापदादा अपनी सर्व सम्पत्ति सहित कुर्बान जाते हैं। जैसे बच्चे संकल्प करते बाबा हम आपके हैं तो बाबा भी कहते कि जो बाप का सो आपका।

स्लोगन:- सहजयोगी वह हैं जो अपने हर संकल्प व कर्म से बाप के स्नेह का वायब्रेशन फैलाते हैं।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

आप सभी ब्राह्मण आत्माओं ने जन्म लेते ही यह व्रत लिया है कि हमें बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। जैसे सभी एवररेडी शब्द बोलते हो ऐसे सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में एवररेडी बनो, इसमें अलबेलापन न आये।